



Mr.dipansi

04 Mar 1965

07:50 PM

Vijapur

Model: Gem-Report

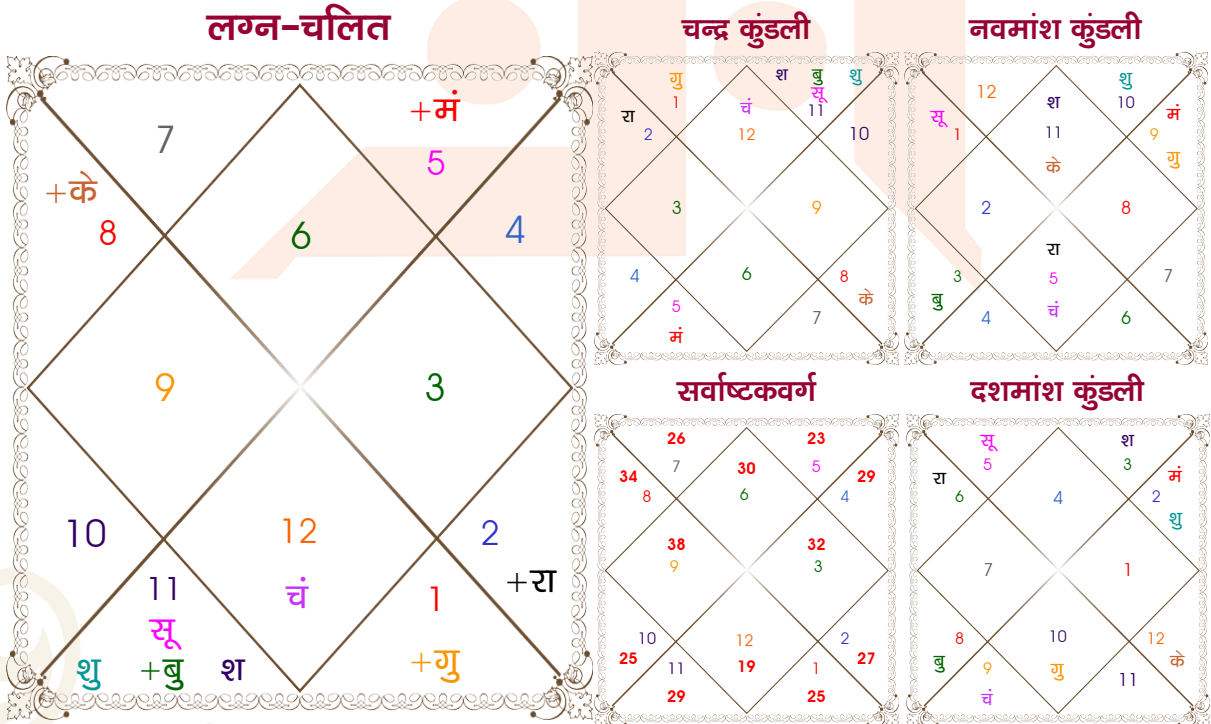
Order No: 120589201

तिथि 04/03/1965 समय 19:50:00 वार गुरुवार स्थान Vijapur चित्रपक्षीय अयनांश : 23:21:58
अक्षांश 23:34:00 उत्तर रेखांश 72:45:00 पूर्व मध्य रेखांश 82:30:00 पूर्व स्थानिक संस्कार -00:39:00 घंटे

पंचांग	अवकहड़ा चक्र
साम्पातिक काल : 05:59:33 घं	गण : मनुष्य
वेलान्तर : 00:11:51 घं	योनि : गौ
सूर्योदय : 06:58:54 घं	नाडी : मध्य
सूर्यास्त : 18:43:01 घं	वर्ण : विप्र
चैत्रादि संवत : 2021	वश्य : जलचर
शक संवत : 1886	वर्ग : सर्प
मास : फाल्गुन	रैजा : अन्त्य
पक्ष : शुक्ल	हंसक : जल
तिथि : 2	जन्म नामाक्षर : दू-दूती
नक्षत्र : उ०भाद्रपद	पाया(रा.-न.) : ताम्र-लौह
योग : शुभ	होरा : चंद्र
करण : बालव	चौघड़िया : अमृत

विंशोत्तरी	योगिनी
शनि 17वर्ष 7मा 27दि	भद्रिका 4वर्ष 7मा 23दि
शुक्र	संकटा
31/10/2006	27/10/2018
31/10/2026	27/10/2026
शुक्र 01/03/2010	संकटा 06/08/2020
सूर्य 02/03/2011	मंगला 26/10/2020
चन्द्र 30/10/2012	पिंगला 07/04/2021
मंगल 30/12/2013	धान्या 06/12/2021
राहु 30/12/2016	भामरी 27/10/2022
गुरु 31/08/2019	भद्रिका 07/12/2023
शनि 31/10/2022	उल्का 07/04/2025
बुध 31/08/2025	सिद्धा 27/10/2026
केतु 31/10/2026	

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			06:31:34	कन्या	उ०फाल्गुनी	3	सूर्य	बुध	---	0:00			
सूर्य			20:26:12	कुंभ	पू०भाद्रपद	1	गुरु	गुरु	शत्रु राशि	1.15	मातृ	पितृ	अतिमित्र
चंद्र			04:16:31	मीन	उ०भाद्रपद	1	शनि	शनि	सम राशि	1.68	कलत्र	मातृ	जन्म
मंगल	व		27:17:02	सिंह	उ०फाल्गुनी	1	सूर्य	सूर्य	मित्र राशि	1.08	अमात्य	भ्रातृ	प्रत्यारि
बुध	अ		28:01:50	कुंभ	पू०भाद्रपद	3	गुरु	शुक्र	सम राशि	0.72	आत्मा	ज्ञाति	अतिमित्र
गुरु			27:10:36	मेष	कृतिका	1	सूर्य	सूर्य	मित्र राशि	1.15	भ्रातृ	धन	प्रत्यारि
शुक्र	अ		10:42:41	कुंभ	शतभिषा	2	राहु	शनि	मित्र राशि	0.77	ज्ञाति	कलत्र	मित्र
शनि	अ		14:58:50	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	केतु	मूलत्रिकोण	1.37	पुत्र	आयु	मित्र
राहु	व		25:23:17	वृष	मृगशिरा	1	मंगल	राहु	मित्र राशि	---	---	ज्ञान	वध
केतु	व		25:23:17	वृश्चि	ज्येष्ठा	3	बुध	राहु	मित्र राशि	---	---	मोक्ष	सम्पत

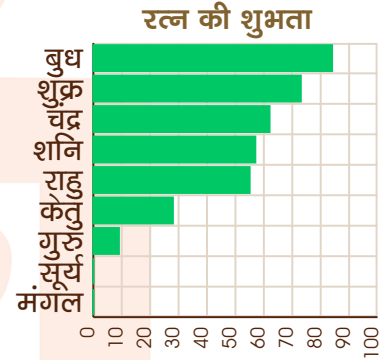


रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	84%	शत्रु व रोग मुक्ति, व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य
हीरा	शुक्र	73%	शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय, धन
मोती	चंद्र	62%	दम्पति, धनार्जन
नीलम	शनि	57%	शत्रु व रोग मुक्ति, सन्तति सुख
गोमेद	राहु	55%	भाग्योदय, शत्रु व रोग मुक्ति
लहसुनिया	केतु	28%	पराक्रम हानि, व्यय
पुखराज	गुरु	9%	दुर्घटना, ग्रह कलेश, दाम्पत्य कष्ट
माणिक्य	सूर्य	0%	शत्रु व रोग, व्यय
मूंगा	मंगल	0%	व्यय, दुर्घटना, पराक्रम हानि



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शनि	31/10/1982	0%	50%	0%	91%	9%	80%	69%	61%	3%
बुध	31/10/1999	0%	50%	0%	97%	9%	80%	57%	55%	28%
केतु	31/10/2006	0%	50%	0%	84%	9%	80%	38%	34%	52%
शुक्र	31/10/2026	0%	50%	0%	91%	9%	86%	63%	61%	41%
सूर्य	30/10/2032	0%	69%	0%	84%	22%	61%	38%	34%	3%
चंद्र	31/10/2042	0%	75%	0%	91%	9%	73%	57%	34%	3%
मंगल	31/10/2049	0%	69%	0%	72%	22%	73%	57%	34%	41%
राहु	31/10/2067	0%	50%	0%	84%	9%	80%	63%	67%	3%
गुरु	31/10/2083	0%	69%	0%	72%	34%	61%	57%	55%	28%



FUTUREPOINT
Astro Solutions



विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत् ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते हैं। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते हैं। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ हैं तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते हैं अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते हैं।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते हैं। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुंडली और रत्न

आपके लिए पन्ना रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है।

पन्ना आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

इसे धारण करने से आपके जीवन में विशेष ऊर्जा का प्रवाह होगा। आपकी प्रतिभा बढ़ेगी। इस रत्न को धारण करने से आपके रुके हुए कार्य बन सकते हैं। स्वास्थ्य व सुख सम्पत्ति का लाभ मिल सकता है। आपको कार्य करने पर जो श्रेय नहीं मिल पाता है वह प्राप्त होने लगेगा। इस रत्न को धारण करने से आपको कुछ ही समय में सुख की अनुभूति होगी। अतः यह रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के जीवन पर्यन्त धारण करें तो लाभ होगा।

आपके लिए हीरा, मोती, नीलम एवं गोमेद रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम हैं। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

लहसुनिया रत्न आपके लिए नेष्ट है। अतः इसे न पहनना ही बेहतर है। इसे धारण करने से आपको मानसिक परेशानी एवं स्वास्थ्य हानि हो सकती है। अतः यदि इसे धारण करना हो तो इसकी अनुकूलता का परीक्षण अवश्य कर लें और विभिन्न दशाओं में इसकी अनुकूलता का परिक्षण करते रहें, क्योंकि यह रत्न आपके लिए किसी दशा या गोचर में विशेष कष्टकारी भी हो सकता है।

पुखराज, माणिक्य व मूंगा रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा उन्नति बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न किसी भी दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध षष्ठ भाव में स्थित है। आपको बुध रत्न पन्ना धारण करना चाहिए। पन्ना धारण करने से आपके विवेक भाव में वृद्धि होगी। तथा रत्न प्रभाव से आप अपने परिश्रम के बल पर सफलता अर्जित करेंगे। आप आत्मविश्वासी और पुरुषाधी बनेंगे। यह रत्न आपको स्वभाव से तार्किक और विनोदी बनाएगा। शत्रुओं की अधिकता होने पर भी आप उन्हें शांत रखने में सफल रहेंगे। पन्ना रत्न आपकी मित्रता किसी बहुत प्रतिष्ठित व्यक्ति से करा सकता है। रत्न शुभता से आप अच्छे कार्यों पर व्यय करेंगे।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में बुध लग्नेश एवं दशमेश है। लग्नेश बुध की शुभता प्राप्ति के लिए आप पन्ना रत्न धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न आपको बौद्धिक क्षेत्रों से संबंधित कार्यक्षेत्र दे सकता है। रत्न शुभता से आपको आजीविका क्षेत्र में सुख-सम्मान की प्राप्ति हो सकती है। लग्नेश बुध रत्न आपकी विवेक योग्यता को बढ़ाएगा। पन्ने की शुभता से आप में व्यापारिक बुद्धि, लेखन योग्यता का विकास कर सकता है। पन्ना रत्न लग्नेश का रत्न होने के कारण अपनी शुभता से आपको स्वास्थ्य सुख भी प्रदान करेगा। जीवन को आरोग्य रखने में भी पन्ना रत्न आपके लिए शुभ फलदायी रत्न है। पन्ना रत्न आपको गणितीय कौशल भी देगा।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत्त होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ॐ बुं बुधाय नमः का १ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न ३ रत्ती का कम से कम, अन्यथा ६ रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते हैं।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र षष्ठ भाव में स्थित है। आपको शुक्र रत्न हीरा धारण करना चाहिए। हीरा रत्न आपको सुशिक्षित और विवेकवान बनायेगा। नौकरी क्षेत्र में आपको स्त्रियों से सहयोग की प्राप्ति होगी। यह रत्न आपके साहस को नियंत्रित करेगा। आपकी संतान अच्छी होगी और आप पुत्र-पौत्रों से युक्त हो सकते हैं। यह रत्न धारण कर आप आवश्यक विषयों पर व्यय करने का प्रयास करेंगे। आपको भाई-बहनों और मामा से सुख प्राप्त होगा। स्वतंत्र व्यवसाय से उत्तम लाभ प्राप्त करने के लिए भी आप यह पुखराज रत्न धारण कर सकते हैं।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में शुक्र द्वितीय और नवम भाव के स्वामी है। लग्नेश बुध के मित्र व त्रिकोण भाव के स्वामी होने के कारण आपके लिए विशेष शुभ हो गए हैं।

शुक्र की शुभता में बढ़ोतरी करने के लिए आप शुक्र रत्न हीरा धारण कर सकते हैं। हीरा रत्न आपके लिए धन-धान्य, कुटुंब सुख, संचित धन एवं यश प्रदायक सिद्ध हो सकता है। भाग्य, धर्म व दूर स्थानों की यात्रा के लिए भी आप शुक्र रत्न हीरा अवश्य धारण करें। यह रत्न आपका भाग्योदय करेगा। हीरा रत्न धारण से आपकी उन्नति सहज हो सकती है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ॐ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा रत्न से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र सप्तम भाव में स्थित है। आपको चंद्र रत्न मोती धारण करना चाहिए। मोती रत्न धारण से आपके स्वभाव की चंचलता की कमी होगी। यह रत्न आपकी नेतृत्व करने की क्षमता बढ़ायेगा। रत्न शुभता से आपको अनेक यात्राएं करनी पड़ सकती है। मोती रत्न आपकी स्फूर्ति बढ़ायेगा। जीवन साथी से आपके संबंध आत्मीय रहेंगे। मोती रत्न आपको आपके व्यवसाय में अच्छी सफलता देगा। रत्न प्रभाव से आपको एक से अधिक बार व्यापार क्षेत्र में बदलाव करने पड़ सकते हैं।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में चंद्र एकादशेश भाव के स्वामी है। आप चंद्र ग्रह की शुभता प्राप्ति के लिए मोती रत्न धारण कर सकते हैं। मोती रत्न धारण से आपको धन अर्जित करने के नवीन साधन प्राप्त हो सकते हैं। यह रत्न धन संचय में सहयोग सिद्ध हो सकता है। इसके साथ ही मोती रत्न आपके बड़े भाई से संबंधों में सुधार करेगा। आयु पर आने वाले असमय संकटों को भी टालने में मोती रत्न महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। यह रत्न आपको राजसिक जीवन प्राप्त करने में सहयोग कर सकता है। आय भाव के स्वामी चंद्र का रत्न मोती आपको धन और आय योग्यतानुसार देने में समर्थ है।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कनिष्ठिका अंगूली में, सोमवार को प्रातः काल में धारण करना शुभ है। प्रातः काल की सभी क्रियाओं को करने के बाद इस रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात इसकी धूप, दीप, फूल से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात चंद्र मंत्र ॐ सौ माय नमः का एक माला जाप रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। तदुपरांत चंद्र वस्तुओं जैसे- चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम ४ रत्नी से १० रत्नी का

धारण करना शुभफलकारी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न अंगूठी रूप के अलावा लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। विशेष आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे - सफेद मूल स्टोन, सफेद हकीक एवं २ मुखी रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते हैं।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि षष्ठ भाव में स्थित है। आपको शनि रत्न नीलम धारण करना चाहिए। नीलम रत्न आपका शरीर सुंदर, पुष्ट और निरोगी रखेगा। यह रत्न आपकी पाचनशक्ति अच्छी रखेगा। रत्न शुभता से आप एक अच्छे वक्ता और तर्ककुशल व्यक्ति बनेंगे। आपके शत्रु आपसे भयभीत रहेंगे। नीलम रत्न से आपके कई नौकर-चाकर और अनुयायी होंगे। आप राजभय से मुक्त रहेंगे। यश संपत्ति और अधिकार की प्राप्ति में भी नीलम रत्न आपके लिए शुभफलकारी रहेगा। यह रत्न आपको गुणों का परीक्षक और श्रेष्ठ कर्म करने वाला व्यक्ति बनाएगा।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में शनि पंचमेश और षष्ठेश है। शनि त्रिकोण भाव के स्वामी है और लग्नेश बुध के मित्र भी है। अतः नीलम रत्न आपके लिए अनुकूल और शुभ रत्न सिद्ध हो सकता है। नीलम रत्न धारण करने से आपकी संतान का स्वास्थ्य अनुकूल रहेगा। यह रत्न संतान सुख भी प्रदान कर सकता है। नीलम रत्न धारण से आपको विद्या ग्रहण या शैक्षिक क्षेत्र में शुभता प्राप्त हो सकती है। भूमि व संपत्ति से लाभ पाने के लिए भी आप नीलम रत्न धारण कर सकते हैं। यह रत्न शत्रुओं पर विजय पाने में सहयोगी रत्न सिद्ध हो सकता है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ॐ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम ३ रत्नी, अन्यथा ५-६ रत्नी का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु नवम भाव में स्थित है। राहु ग्रह की शुभता बढ़ाने के लिए आप गोमेद रत्न धारण करें। गोमेद रत्न शुभता से आप परिश्रमी और ईश्वर पर श्रद्धावान बनेंगे। रत्न शुभता से आप सभ्य और सहृदय व्यक्ति बनेंगे। यह रत्न आपको सुधारवादी विचार

वाले, उन्नति आत्मशक्ति वाले और जगत के कल्याण के लिए प्रयत्नशील व्यक्ति बना सकता है। यात्राओं को सुखद बनाने के लिए भी आप गोमेद रत्न धारण कर सकते हैं। विद्वान और पूज्यनीय व्यक्तियों के संपर्क में आने के अवसर यह रत्न आपको दे सकता है।

राहु वृष राशि में स्थित है व इसका स्वामी शुक्र षष्ठ भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण करने से आप अपने शत्रुओं पर चातुर्य से सफलता प्राप्त करेंगे। आपको शत्रुओं पर अनायास ही विजय प्राप्त होगी। यह रत्न आपको उदार हृदय और सामान्य से अधिक बुद्धिमान बना रहा है। आप विद्वान, ऐश्वर्यवान होकर ऋण मुक्त जीवन-यापन करेंगे। इस रत्न को धारण करने से आपके रोगों में कमी होगी। आप गंभीरता के साथ अपने प्रतियोगियों को परास्त करेंगे। आपको उच्च प्रतिष्ठा, सुख और प्रभुता की प्राप्ति होगी। रत्न शुभता आपको बड़े कार्य करने के अवसर देगी। शत्रु आपसे भयभीत रहेंगे। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपको अनेक प्रकार के सुख देगा।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान करायें। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ॐ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु तीसरे भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः केतु रत्न लहसुनिया धारण करने पर आपकी धैर्यशक्ति और दानशीलता प्रभावित हो सकती है। यह रत्न आपके बल, धन एवं यश में कमी करेगा। खान-पान का पूर्ण सुख आपको नहीं मिल पाएगा। शत्रु आपको समय समय पर परेशान कर सकते हैं। शत्रु भय के कारण आपके जीवन की अनेक गतिविधियां बाधित हो सकती हैं। व्यर्थ की चिंताओं का आगमन आपके जीवन में हो सकता है। गोमेद रत्न के प्रभाव से आपको अनजान भय का सामना करना पड़ सकता है। भ्रम और चिंता से व्याकुलता का अनुभव आपको होगा।

केतु वृश्चिक राशि में स्थित है व इसका स्वामी मंगल द्वादश भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने से आपको शयन संबंधी सुख की कमी होगी। यह रत्न आपको अनिद्रा रोग भी देगा तथा रत्न पहनने पर आपको परिवार से दूर रहना पड़ सकता है। जीवनसाथी से सुख में कमी तथा विवाह में भी विलम्ब की स्थिति बन सकती हैं। इस रत्न को पहनने पर आपकी विदेश यात्राएं स्थगित हो सकती हैं। अथवा यात्राओं में असफलता की स्थिति

बन सकती है। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपको पैरों की तकलीफ, नाखूनों से संबंधित तकलीफ अथवा दांतों से संबंधित रोग देगा। रत्न धारण से आपकी धार्मिक यात्राओं में सुख की कमी बनी रहेगी।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः गुरु रत्न पुखराज धारण करने पर आपका स्वजनों से लगाव कुछ कम हो सकता है। यह रत्न पैतृक धन की हानि करा सकता है। पुखराज रत्न प्रभाव से आपकी आर्थिक उन्नति में बाधाएं आ सकती है। धन, आय और लाभ रुक रुक कर आगे बढ़ेंगे। यह रत्न आपको सुमार्ग से हटा सकता है। आपकी अस्वस्थता बढ़ सकती है। कुल परंपराओं से आप हट सकते हैं। पुखराज रत्न आपको कंजूस और लालची भी बना सकता है। आपको अपनी योग्यता अनुसार कार्य न मिलने के योग भी बन रहे हैं। गैरधार्मिक विषयों पर आपके व्यय अधिक हो सकते हैं।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में गुरु चतुर्थेश और सप्तमेश है। गुरु रत्न पुखराज धारण करने पर सुखों का हास हो सकता है। आपको माता की सेवा के अवसर कम ही मिल पाएंगे। पुखराज रत्न आपको सरकारी नौकरी में बाधाएं दे सकता है। धन-धान्य और वाहन सुख में भी यह रत्न कमी कर रहा है। गुरु रत्न पुखराज आपकी तीर्थयात्राओं को सीमित कर सकता है। आपके द्वारा माता-पिता को कष्ट हो सकता है। यह रत्न आपको इष्टमित्रों से दूर रख सकता है। रत्न प्रभाव से आपके वायु रोग प्रभावी हो सकते हैं। रत्न आपके धन में कमी कर सकता है। पुखराज रत्न पहनने पर आपको पराश्रय में रहना पड़ सकता है। इस रत्न को पहनने के बाद आपको शुभ कार्यों में सम्मिलित होने के अवसर कम ही मिल पाएंगे। आप पुखराज रत्न धारण कर गुरु ग्रह की शुभता प्राप्त कर सकते हैं।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य छठे भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने पर आपके रोग, ऋण और शत्रुओं की संख्या बढ़ सकती है। यह रत्न आपके तेज में कमी कर सकता है। नैनिहाल पक्ष से आपके संबंध खराब हो सकते हैं। माणिक्य रत्न प्रभाव से आपकी माता के कष्ट बढ़ सकते हैं। अत्यधिक कठोरता आपके स्वभाव का अंग बन सकती है। माणिक्य रत्न नौकरी के क्षेत्र में परेशानियां दे सकता है। उच्चाधिकारियों से आपके संबंध खराब कर सकता है। कार्यक्षेत्र में बदलाव के योग बन सकते हैं। इस रत्न को धारण करने के बाद आपके जीवन के उतार चढ़ाव बढ़ सकते हैं। नैनिहाल पक्ष के लोगों को कष्ट मिल सकता है।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में सूर्य द्वादश भाव के स्वामी है। सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने पर आपको स्वास्थ्य सुख की कमी हो सकती है। यह रत्न आपके धन संचय में कमी करेगा। माणिक्य रत्न धारण से आपके व्ययों में वृद्धि होगी। यह रत्न आपको बन्धु विरोधी बना सकता है। रत्न प्रभाव से आप व्यापार क्षेत्र में विफल हो सकते हैं। माणिक्य रत्न धारण से आपमें धर्म कार्यों में श्रद्धा से अधिक पाखंड भाव हो सकता है। यह रत्न विदेश में भाग्योदय में

विलम्ब देगा। इस रत्न से आपकी दृष्टि मंद हो सकती है। यह रत्न आपके पिता का स्वास्थ्य पीड़ित कर पिता सुख में कमी करेगा। आप पिता के विरोधी हो सकते हैं। माणिक्य रत्न आपको विदेशगमन में धन का व्यय करा सकता है।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल बारहवें भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर आपमें साहस एवं हिम्मत की कमी हो सकती है। इसके कारण जीवन में आने वाले विपरीत समय का आप साहस के साथ मुकाबला नहीं कर पाएंगे। मूंगा रत्न आपको झूठे दोषारोपण दे सकता है। इसके अलावा रत्न प्रभाव से आपको गुप्त चोटें भी लग सकती हैं। इस रत्न के प्रभाव से आपकी गुरु भक्ति भावना में कमी भी संभावित है। इस रत्न से आपका स्वयं पर विश्वास कुछ कम हो सकता है। आप स्वयं को असफल मान सकते हैं। वैवाहिक जीवन में सुख की कमी हो सकती है। मूंगा रत्न धारण पर आपके जीवन की उन्नति प्रतियोगियों के कारण प्रभावित हो सकती है। रत्न प्रभाव से आपके रोग, ऋण और विरोधी अधिक प्रभावी हो सकते हैं।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में मंगल तृतीयेश एवं अष्टमेश है। मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर पराक्रम भाव आपके काम नहीं आ पाएगा। साहस और जोखिम से काम लेना आपके लिए लाभदायक नहीं रहेगा। मूंगा रत्न आपको शत्रुओं से पराजित करा सकता है। रत्न प्रभाव से आपमें स्वार्थ भावना प्रवेश कर सकती है। मूंगा रत्न आपको पैतृक सम्पत्ति से वंचित कर सकता है। रत्न प्रभाव से आपको घर का सुख प्राप्त नहीं हो पाएगा। इस रत्न को धारण करने पर आपको कठिनाता से धन प्राप्त होगा। स्पष्ट वक्ता होने के कारण आपको मित्रों में उचित सम्मान नहीं मिल पाएगा। यह रत्न आपको तार्किक बुद्धि देगा। रत्न प्रभाव से आप आलोचनात्मक लेखन की ओर आप अग्रसित हो सकते हैं। यह रत्न आपको नौकरी में शीघ्र बदलाव दे सकता है।

दशानुसार रत्न विचार

शुक्र

(31/10/2006 - 31/10/2026)

शुक्र की दशा में आपका पन्ना व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम, गोमेद व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और पुखराज, माणिक्य व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



सूर्य
(31/10/2026 - 30/10/2032)

सूर्य की दशा में आपका पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती व हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

नीलम व गोमेद रत्न नेष्ट हैं और पुखराज, लहसुनिया, माणिक्य व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

चन्द्र
(30/10/2032 - 31/10/2042)

चन्द्र की दशा में आपका पन्ना व मोती रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

गोमेद रत्न नेष्ट हैं और पुखराज, लहसुनिया, माणिक्य व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

मंगल
(31/10/2042 - 31/10/2049)

हीरा, पन्ना, मोती व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया व गोमेद रत्न नेष्ट हैं और पुखराज, माणिक्य व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

राहु
(31/10/2049 - 31/10/2067)

राहु की दशा में आपका पन्ना व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद, नीलम व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज, लहसुनिया, माणिक्य व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु
(31/10/2067 - 31/10/2083)

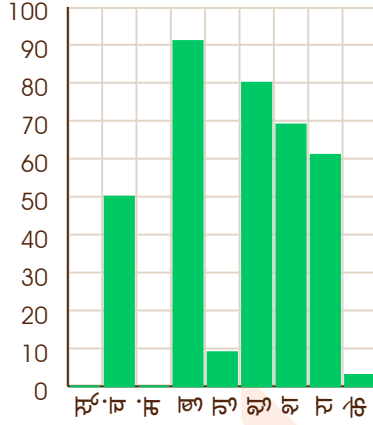
पन्ना, मोती, हीरा, नीलम व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज व लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

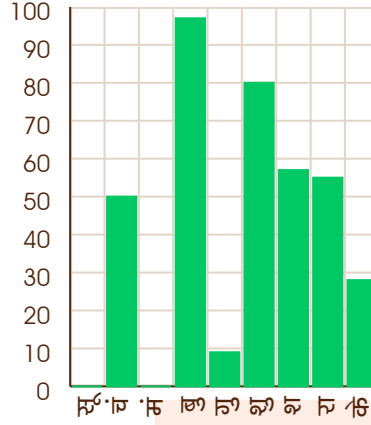


दशा ग्राफ

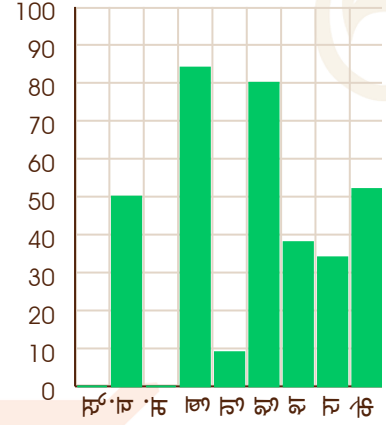
शनि - 31/10/1982



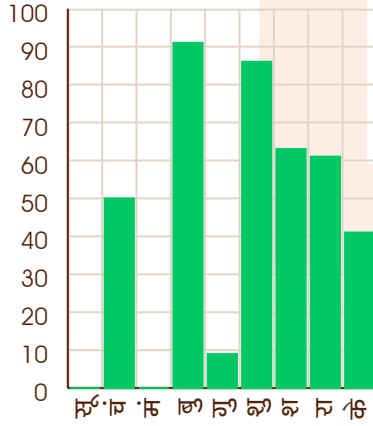
बुध - 31/10/1999



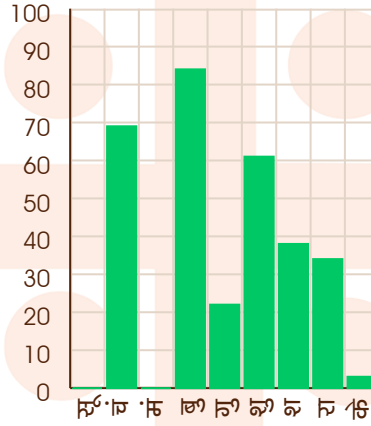
केतु - 31/10/2006



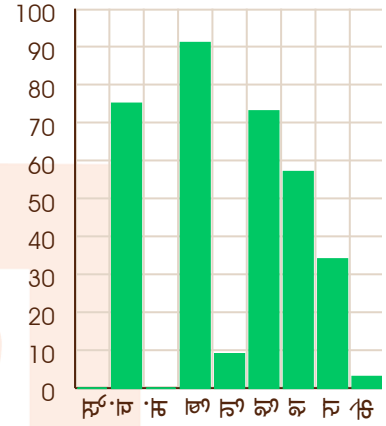
शुक्र - 31/10/2026



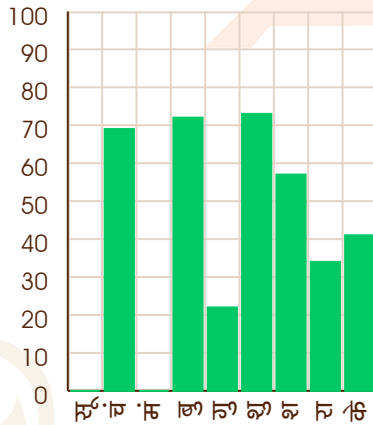
सूर्य - 30/10/2032



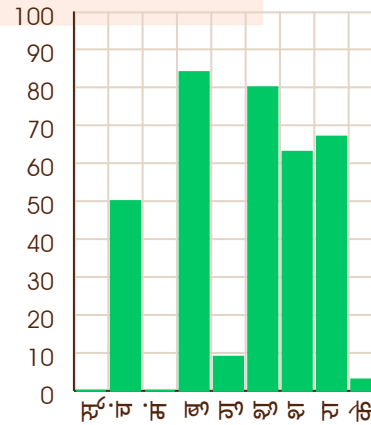
चन्द्र - 31/10/2042



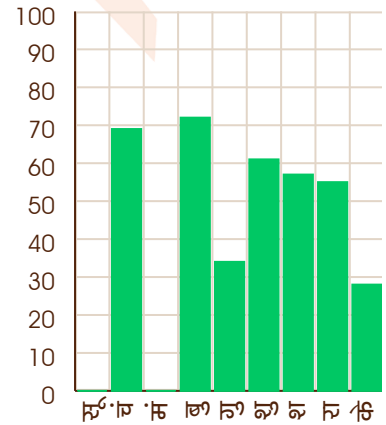
मंगल - 31/10/2049



राहु - 31/10/2067



गुरु - 31/10/2083



FUTUREPOINT
Astro Solutions

